



[illegible]

ASHA ARCHIVES

2877

का ॥ काला ॥ मगदाला कलाचना ॥ जाडा ॥ कमलासनार्थ ॥ शसितर्ध ॥ धवा ॥ कलकला
॥ काला ॥ सहजानर्थ कालिका ॥ जाडा ॥ निषित्तांजिन हृदया ॥ काकठुधवा ॥ काला ॥
नरुमस ॥ कुमाला ॥ त्याकला जाडा ॥ ॥ नमो नमि ॥ विध्वसनाबुह ॥ विंध
विम्बा ॥ माकालावेयापित ॥ सुंरुवा ॥ ॥ नमो नमि ॥ विध्वसनाबुह ॥ विंध
विवासी ॥ कर्ताग्नवमनाहव ॥ सयलजिन हृदया ॥ ॥ पिकनिला बुधभीतवयस
पकजिनमकृगमूनिलयन ॥ ॥ धर्मचक्रवृद्धा कलिभ सवासि ॥ ॥ चक्षु चापरीष
कारुवकन ॥ ॥ सवा ॥ नमि तवचरध ॥ ॥ रुनरीषवमादि ॥ वज्रजिनग

ॐ नमो भगवते

ॐ नमो भगवते

सूक्तल कच ध्यायमः अहिनि सिसु मन्त्र वज्रदवि २३ सज्जमाना नुजयाय सवता ३३
विना सनभा ह प्रदाता ॥ ०६०३० ॥ वागगन्धर्वी वि ॥ रग कदहनय कश्चन
सूय २ यक्ष मरुत सपंच सा विप्र क्रिया ॥ ॥ सुकदवि वलि नाय गीतुवन वीना
शिवल मलायक ऊ समया आनन्द ॥ ॥ विलवि नखर सहजा आनन्द २ कलकाम
लासन हट्टया आनन्द ॥ ॥ पञ्चवृक्ष पचस्कंध स्वनुप २ दनासूत्र न वप्रमृदि गहद
या ॥ ॥ ॐ आहूँ जीवैस्व धन कवित २ उमनु घष्ठ धनि विलमानन्द ॥ ०६०३० ॥
वागवर्धनि ॥ यत आगिनि दवि गीतुवन व्यापिनि २ विप्रमाल रष्ट दर्पे न विना सिनि ॥

ॐ नमो भगवते

॥ नमामि रदवि शी वज्र वा बाहि २ अग्नि सिद्धि दायनि जगत्जननि ॥ ॥ पूर्वदलगत नक
वर्धुगि २ ३३ आनयामि निदवि निलवदनानि ॥ ॥ वायुधमहिनि दवि सितवर्धु
रा २ यक्षि मस चा नीक्षी दवि रगोल वर्धु दहा ॥ ॥ नक्षत्र मया धिनी दवि हवीत व
२ २ दहि न च धी का दवि धूम वर्धु गी ॥ ॥ चतुर्हजय को न क्षाप क मू जात न ना २ स्व
२ २ विज सत्वा न व व सदिग म्ब ना ॥ ०६०३० ॥ वागवर्धनि ॥ ॐ आहूँ दृष्ट अ न व स्वा
हाः मनु उचान धन २ पूजा पूज क पूज क हायः तत्त्व स्वय वलि हा व ॥ ॥
॥ स्वरवः स्वाहि २ वलि पूजा नः घयः द्या गय २ विप्रहन २ यक्ष मरुत सपंच सा वि

ॐ
ॐ
ॐ

लायकज्ञानसर्वज्ञता ॥ सर्वयक्षबाक्षसः हृत्पतपिष्ठा ॥ आमान्दा नयस्मात्र
जकजकिनिः इण्डु अयुष्मन्नायः ॥ द्यस्वलिगुदुगुन ॥ दामेधितिसवकार्य
सिधिरः सवसूखसपतिबोधिर ॥ आसम्भनतथागतवचनः सवसूखसपतिबोधिर ॥
॥ समयावक्षकुदानयतिरः सर्वसिधिसपतिभातिर ॥ अथैवतथैवः हृत्तथैवतथैव
जिष्ठमधिकामर्थ ॥ - ०६०३ - ॥ रागपथमंजलि ॥ अनिलः अनिलः अनिलः अनिलः
मनुमधुलचक्रलाया ॥ वरुणकलसवजालसंपरीहृदिः मनुमधुलचक्रलाया ॥
मनुमधुलचक्रलायाः ॥ अथैवतथैवः हृत्तथैवतथैवः वरुणकलसवजालसंपरीहृदिः

ॐ
ॐ
ॐ

स्ववक्षरणीया ॥ वृक्षीसविबंविः लक्ष्मवसजहिङ्गहिः गहिर्गाहे अयससम्भन ॥
नरुगसर्वदवः वरुणकलसवजालसंपरीहृदिः मनुमधुलचक्रलाया ॥
रुमायधरुवाथाः शीतवनगुम्भचक्रविवाहीविवा ॥ शिनिववधनशनातवसंप्र
सादिलः रुविगलउयकाकावा ॥ ॥ अनिलसंभनगुम्भवाधनगुम्भवागल
दुदिगलहावअहाव ॥ अचमसवतहयवधनः दुदिगलहावअहाव ॥ अनिलसंभनगुम्भवाधनगुम्भवागल
हाव ॥ ०६०३ ॥ रागलालित ॥ अनिलसंभनगुम्भवाधनगुम्भवागल

ॐ

चिक्कलभरंशः हं कालवज्रामुद्रकः सफभंसाधितज्ञानमृत्तयं ॥ ५ ॥ च
 दामृतरसवाधिरुलदायकः सर्वजिनव्यापिगमहृजकलसं ॥ जगतमलरक्षाधित
 नाकनुनाहावः असंभावननासनावनक्षत्रयं ॥ ॥ वज्रयवमानूमयगच्छवृत्त
 कसरवरक्षाधितः यक्षपिष्टरव ॥ हं कालमकुसूचार्यसवधः वज्रसुलपितविषाण
 कलसं ॥ ॥ यतसखननः तफनुपराव अरुष्यमभुकिनिजलज्जय ॥ अनिमिः
 भंभनभदवताचकः ज्ञानसत्त्वमानियः हृदिजकलसं ॥ ॥ पाखादिआचमनः दा
 नयननसमयसत्त्वः प्रकासितः विमलकलसं ॥ महानागजविहयः वाधिचिरुयं सम

शिवरायन

यमत्त्वज्ञानसत्त्वचिकित्सा ॥ ॥ ५०३० ॥ ॥ वागगभावे वि ॥ शिवरायनचउवसविहाः
 ना ॥ कबरहृपतिल्लमधुलहाम ॥ ५ ॥ ॥ हामहामकचयोयाहं हं नहिचउमाहा ॥ नाग
 हवमाहवाधिवहृद ॥ ॥ प्रहाघरुउपायिववजा ॥ नविभामिवापयिगाः आवायव
 यिल्ल ॥ ॥ वामदहिनकरहृवहिपाय ॥ आलायिवजानव आहृगिदिना ॥ ॥ क
 र्ववान् अरुष्यनरहाम ॥ वज्रपवनः चियसंवाभा ॥ ॥ ५०३० ॥ ॥ वागना ॥ नकावदनगी
 लायनसुयवी ॥ अरुगदभरुपनहृरक्षकिचन ॥ ५ ॥ ॥ रुक्मदिवानुनिसहामामः
 किदवि ॥ जगतप्रभादिचमयनसुवाग ॥ ॥ आगमवदप्रानवर्धन ॥ आगधर्मः

नकावदनगी

ॐ
ॐ

दिक्षीगुनु उयदस्य ॥ एकवृक्षस्य नृपकभक्तुम् २ सया लयागीनी माभ हनुतां नु
हनुतां ॥ भतगुनु च वधसि न गत धनिया ॥ २० नयिणी वा कवकभुना हस्व नृपि ॥
॥ - ६०३ - ॥ नागहन्त वि ॥ नमाः हं अकानुशयधनु २ स्वधुविसेत्त उवाधनु ॥ ५ ॥
ननाहं २ ननात नहं हं ॥ ॥ वधा अविंगत आ गधनु २ वज्र अघधमूडा धनु
॥ ॥ धवल शुस्व नद हधनु २ सल दधुसाहिय च उमनु ॥ ॥ माया अदह
विन जागु ॥ २ साहिय कनु धसत्तमहं ॥ - ६०३ - ॥ नागहन्त वि ॥ ॥ ॥ चक्र न
विसृष्टिः मधुलमाभः धिति आन न्दमनुति धना २ वज्र वा नाहि अलिगभसम्बल ना

ॐ
ॐ

जीह्वनजातिर

नामस्मि महाजाला ५ ॥ ननाहं २ ननात नहं हं ॥ ॥ निलवर्ध चतु
वका प्रतिमूरवीनयः पदना आधमनुति धना २ विश्वधनु अर्ध चडा जता मरुत धना
हा अ आह वधसूत सातिता ॥ ॥ वज्र घटगंज चर्म उमनुत स्वायः विलमा
आन न्दमनुति धना २ कनति कपालः यवधुपास जीह्वल बुक्त तिल धनाः व्याधु चर्म कर्हि
यहिरा ॥ ॥ दिगम्बिदिगं का का अमजकिनिद विः सहजा आन न्दमनुति धना
नमाभि २ अचक्र सम्बलः सतगुनु चश आना धिना ॥ - ६०३ - ॥ नागहन्त वि ॥
जीह्वनजातिर मनुति अहलाय ना विनयहि ॥ ॥ नाचयी वज्र सत्तय नम अ नम

विनवज्ञान

विनवज्ञाने ॥ लब्धिमसहस्रकचक्ष दसधुयसहस्रवर्हि ॥ वहविहलनय
प्रविभासि मूललायनवर्हि ॥ ६०३ ॥ गगयधम ॥ कलितवज्ञानन विवि
भासिकोचदः जावयिओका लनादरुपि २ कूडनुथाया शीतवननीना ययिस
यिजिनविद्वयुप ॥ ५ ॥ यवमाज्जनथः मूकतेयपक्षनी काद्यधिपथी
रुवजा २ उंजा हं ३ काद्यधिपथीमरुवजा ॥ कलिभकमलसजा हं सह
जाभानथः यवननगंगहनीशगति २ अयमखयदृजः चतमकूटमीचा रुष्ट

विनवज्ञान

मिताक्षन दहिनवाम ॥ ॥ ६०४ ॥ दसधुलायनी वरुपयैकः हं कू मरुक्षीतनूपक
लित २ वरुखमभन दहिनकरधानी ॥ नमद्यधुत्यवचाययिधानी ॥ शिविचि
रुनत्तारुचक्षः विहयितरुलुगिभूमग मूकतेयपक्षनी २ भगयुचवक्ष कमल
प्रसादः नमामियनमादिनलायदं ॥ ६०३ ॥ यवगताधीकांलाव्वधिपया
वाला मूमूतिवकनकाला २ घनकपिधिहारीवजारीः कनूनकीयाहानलाया ॥
५ ५ ॥ मलयीजकूडनुवजा ॥ दिक्षीमातहिनवजा ॥ कटिहनुखाजनमं

॥ अथ मय नायि वरी नया ॥ १ ॥ हान काल जनप नया ॥ २ ॥ कृष्ण वरायी नया ॥
 चउसमकसुवीलाः कर्ष नला वनया ॥ ३ ॥ मलयी नयि नभानो जेः तहिं हनुखा जल
 या ॥ ४ ॥ अथ रत्न कृष्ण कनकः शुद्धो मूर्धनया ॥ ५ ॥ निलै मूर्धन्या गच धावरीः क
 द्विजस बाय नया ॥ ६ ॥ ॥ नागजा वा वलि ॥ सर्वे वृद्धा वृद्ध मधिरुः विष्णु मा
 लक्ष्मि दर्ता ॥ ७ ॥ वज्रयागी नागशमिष्ठिताः काल दला भिरु जीतीला चना ॥ ८ ॥ नमा
 मि ॥ श्री वा कृत्ति मिष्ठियागी नाग नमिष्ठिता ॥ ९ ॥ अथ अष्टादि सर्वा सिद्धि यागी नैर्गमिष्ठिता

॥ आदिश्य मधुल कृष्ण मय मदिपमाल भुवे च ना ॥ १ ॥ चिकि कृष्ण ल कठिला चक
 मखल कृष्णिता ॥ २ ॥ कला ते रत्न माल कृष्ण दर्ताः सकृद कथा दिगम्बरा ॥ ३ ॥ मृ
 माल गशमिष्ठिताः लाली ज काल्य कवा ॥ ४ ॥ तुम्हा दिवत कृष्ण नकाः हय लवि ॥ ५ ॥
 व्यापिता ॥ ६ ॥ अथ चन रत्न सील धारियाः अथ अष्टादि कर्षया गा वरीया ॥ ७ ॥ ॥ नागः
 अहदि ॥ ८ ॥ हादा अहत् नरः कृष्णायील सम्वलाः धरणी कचा कृष्ण मरु ॥ ९ ॥ तुम्हा वान कन म
 धिया मूर्धनः सकृद कथा दिगम्बरा ॥ १० ॥ ॥ नवनमानुः सम्वल लायाः सम्वल कृष्ण

लः सहस्रं गाना ॥ धवकवा नाहि आलीगन कल २ बुधी सो विलंबीन ४ नः समल
 संविना ॥ ॥ रगा कूठ हनी वेम्भूसा सधु रक्षकं २ कनू धन नलायत हिरवक ॥ ॥ वा
 दस रूज धात्रीः चानीच उवदन २ नील सहावः गगन ह तुरीना ॥ ॥ २०३० ॥ नागविला
 उदेता रलयिया पवन इष्टारः अमर सह दामिक कासल्लिता ॥ ५ ॥ धात्र इष्टारः
 रुवनि सतरीटा २ अखयानि नैजनः भादालं कता ॥ ॥ दिन कलम धुलः मरधमी
 ता २ कनू नामरुनसः सवकलं कता ॥ ॥ दग्ध आलीगन हवः पटि हंता २ ॥

वाश्चर्यनलसिलनमिता ॥ गगनाक्रियवनपटीगुनूत्काश्चर्यनलसिलनमिता ॥
 सिलनमिता ॥ - ६०३० - ॥ नागकामाग्न ॥ हंती जसंत वरुसमदहाः नवनत वरु
 सतनक्षनधनाश्चादक्षरुजाविवदनाः द्वादशवर्गुनीनकनैर्ग ॥ ६५ ॥ नमामी
 श्रीचक्रवर्त्तुमालाकृतवतसहस्रनी ॥ चतुर्विंशतिपि ॥ ७५ ॥ नः स्वामी
 लोविच ॥ ७५ ॥ चतुर्वचकषदक्षिनीपनीष्टाः द्वादशपञ्चालीष्टा ॥ ७५ ॥
 पञ्चालीष्टाः द्वादशपञ्चालीष्टाः द्वादशपञ्चालीष्टाः द्वादशपञ्चालीष्टाः

रुपयामि

मामिषीचकसम्बना ॥ ततगुचुचवतः सिलगठधार्यः हतयीगामधीवजकुली
॥ २ ॥ दानपतिलमनाहर्षः शयमधुलज्वावाधीठा ॥ ६०३ ॥ रागप्रधमगोलि
ऊयवाधुलिः हनुआधलयी २ सयलभुनाह्वनजगतउधायो ॥ ५ ॥ तहंतगवति
पाइरवमलमहिमधुलः नोपूनवूनमूनकावा २ हाउंरमालआतवधः विहसितमय
लघच्छउलावा २ योनीगीमिडीनयतिगीनीधयता ॥ ॥ कनीतरवत्यनः थीवनुड
शलसिलमाला २ कुरिषधंगवलमकूटक ॥ ॥ शिलसमिधुनः केजलसुला

रुपयामि

२ कसुपिकर्णनः तामूलसूखसाभा ॥ तनयाभुनतवजः वाकुलिदासा २ थीवज
दविप्रसादधीहनुआयाया ॥ ६०३ ॥ रागमालव ॥ तहंतवज्जुआधुआलाया २ थी
हतगमनः यागीनीयशील ॥ ५ ॥ आनदादिपुवाः कुलिआनदादिदवी २ यनीनाच
योहनुआः मनसाधपूर्य ॥ ॥ एकसिंहहिनूः नीजकनुहनुआ २ सवनीभूनहापि
आयीसताय ॥ ॥ थीहनुआदियानः कालयीचधुनी २ गीतभूनहादिकबंकिवाऊन ॥
॥ आनीकालीरयीः पादधनन २ उचउजागीनीः मंबांलागत ॥ ॥ ययीसया

सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापकः सर्वभूतहितः सर्वज्ञः सर्वशक्तिः सर्वव्यापकः सर्वभूतहितः

होवती अहंकारसंज्ञा इति शक्तिरिति वाक्यम् ॥ घटस्य गोले गोची नीर
वर्तमानो रक्षणयन च उस्महं च आवाला ॥ १००३० ॥ नागदीक्षु ॥ दिव्यं च कर्म
वक्तव्यं न रत्नगतमहत्कर्मिः वल्लभी नीला चना ॥ ५ ॥ तमाद्यो विबुधजाकिनीः
विश्वजननी रक्षावतनवापीतः रत्नज्ञानदायनी ॥ ५ ॥ दहिनु कचवगदी दसितक
मक्ति रत्नमकलातकः चं दुर्मालापि वधी ॥ ५ ॥ तनुनीमधुलामाभः उदिया रत्नमन
नत्तय ववलः अतदपवसिता ॥ ५ ॥ श्रीवीगाधोदवीः शुभननसहिमा रत्नकला

सर्वोक्तानां

धिसिद्धिदहिममाता ॥ १००३० ॥ नागधनाधी ॥ सर्वोक्तानां महासूखक्षणीयाः च उ
ज्ज्वलयादिदहा रक्षावतनरुलंयीः महासूखलायाः च सुसूखी रयीमनीया ॥ ५ ॥
नयापनीतातप रत्ननाः रक्षावतनकस्वर्णि रत्नविकल्पः री रत्ननीदीव रत्न
नज्ञानवचदायनी ॥ ५ ॥ अस्मिता रत्नमधुल उदया मस्तिः कल्यानमिबु
धनी रत्नकरी कपालः रत्नहीगधनीः रत्नज्ञानवचदायनी ॥ ५ ॥ रत्नवचमहत्क
रत्नः चोक्ति रत्नभुलका रत्ननी रत्नचकमखलः पायलका री रत्नचूडनलसिलमा

24
24
24
24

तो मेरा तो प्रभुता है सुभार
है वही है मेरा भोले जा

[illegible]

卷之五

हृत्पद्मसमन्वितस्य चारुवस्त्रस्य जीह्ववन्तलायाश्च चंद्रविन्दः ॥ १ ॥ विविधाधीर्णोत्त
 विहयहृत्पद्मस्य प्रकाशेष्वाद्यादिष्वात्मनः समन्वितस्य चारुवस्त्रस्य जीह्ववन्तलायाश्च चंद्रविन्दः ॥ २ ॥
 विभास्यमानः ॥ ३ ॥ ॥ ४ ॥ ॥ ५ ॥ ॥ ६ ॥ ॥ ७ ॥ ॥ ८ ॥ ॥ ९ ॥ ॥ १० ॥ ॥ ११ ॥ ॥ १२ ॥ ॥ १३ ॥ ॥ १४ ॥ ॥ १५ ॥ ॥ १६ ॥ ॥ १७ ॥ ॥ १८ ॥ ॥ १९ ॥ ॥ २० ॥ ॥ २१ ॥ ॥ २२ ॥ ॥ २३ ॥ ॥ २४ ॥ ॥ २५ ॥ ॥ २६ ॥ ॥ २७ ॥ ॥ २८ ॥ ॥ २९ ॥ ॥ ३० ॥ ॥ ३१ ॥ ॥ ३२ ॥ ॥ ३३ ॥ ॥ ३४ ॥ ॥ ३५ ॥ ॥ ३६ ॥ ॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ३९ ॥ ॥ ४० ॥ ॥ ४१ ॥ ॥ ४२ ॥ ॥ ४३ ॥ ॥ ४४ ॥ ॥ ४५ ॥ ॥ ४६ ॥ ॥ ४७ ॥ ॥ ४८ ॥ ॥ ४९ ॥ ॥ ५० ॥ ॥ ५१ ॥ ॥ ५२ ॥ ॥ ५३ ॥ ॥ ५४ ॥ ॥ ५५ ॥ ॥ ५६ ॥ ॥ ५७ ॥ ॥ ५८ ॥ ॥ ५९ ॥ ॥ ६० ॥ ॥ ६१ ॥ ॥ ६२ ॥ ॥ ६३ ॥ ॥ ६४ ॥ ॥ ६५ ॥ ॥ ६६ ॥ ॥ ६७ ॥ ॥ ६८ ॥ ॥ ६९ ॥ ॥ ७० ॥ ॥ ७१ ॥ ॥ ७२ ॥ ॥ ७३ ॥ ॥ ७४ ॥ ॥ ७५ ॥ ॥ ७६ ॥ ॥ ७७ ॥ ॥ ७८ ॥ ॥ ७९ ॥ ॥ ८० ॥ ॥ ८१ ॥ ॥ ८२ ॥ ॥ ८३ ॥ ॥ ८४ ॥ ॥ ८५ ॥ ॥ ८६ ॥ ॥ ८७ ॥ ॥ ८८ ॥ ॥ ८९ ॥ ॥ ९० ॥ ॥ ९१ ॥ ॥ ९२ ॥ ॥ ९३ ॥ ॥ ९४ ॥ ॥ ९५ ॥ ॥ ९६ ॥ ॥ ९७ ॥ ॥ ९८ ॥ ॥ ९९ ॥ ॥ १०० ॥

卷五

किनीलवज्रहंकासर्वजा ॥ ६००३ ॥ वागवज्र ॥ वामखल्यनधवदहिम
 करति २ पायलनीपुःसुधुमालच्छादीग ॥ ६००४ ॥ दवीनाचयीजवजोतवज्रगीनी २
 जीशिनददवीः श्रीरुचनययीम ॥ ६००५ ॥ कालमृत् २ यीयासंतवदीता २ वागवदमा
 हः करतिनदीदिता ॥ ६००६ ॥ सुलसुकादवीः नीलंगतदवी २ धुंनपाददवीः सुनसुता
 व ॥ ६००७ ॥ श्रीष्टसंहावदवीः कसुमवदवी २ भाद्रमार्गदवीः सवीगजतशी ॥ ६००८ ॥
 वागवज्र ॥ श्रुतासिक्तुमश्रुदहपहा २ वा २ विविधिनलमनीमुद्रविहखिता ॥ ६००९ ॥

ॐ
ॐ
ॐ
ॐ

याः शुभनाथ श्रीसुन्दरलाया ॥ वरुणलोककहा ॥ अलक्ष्मीयाः कश्चिद्विद्याउदय
दीर्घ ॥ सपरगजागीनीकमलविहाय ॥ गलमहासुखमनीषसाद ॥ वरुणवावाही
शूलो गंधममलः नाचयौवर्होवहर्ह ॥ वाद्युलेकावैलपीया ॥ किंदतिहृडा
॥ सुद्वेदता ॥ रुलनप ॥ ॥ सहजसंहरिलपीयाः गताति कश्चिपातधीह
नूताचननपभाद ॥ प्रहाशूलिंगधकिंदतिहृडा ॥ विनासपीठुन्यकनुहं ॥ - ८०
०० - ॥ नमोदिता ॥ दीदलकमलवनः ॥ सुतमधीहः ॥ मधुकनहृतानीना ॥ रथीवि

नृपाक्षयखगमुखद्विः ॥ नदनपालयवपिता ॥ ॥ नमामि ॥ श्रीनेनात्मायी
रुवनमाताः वच्छलादिविः श्रीभृगुमूलि ॥ सयलसुनाधुनवशितचनरथः
अनगच्छिद्विद्विलपदाता ॥ ॥ नदनवशतिवचदनतहृवः ॥ अनगकुरु
महायाजीजातवन ॥ निरुगंगस्नानवागमातिदि ॥ रथः ॥ अगेनेतिधसुनक्षयवन
॥ ॥ अष्टकेनवअष्टयागीनीद्विः ॥ अनगदवासुनक्षयपालः ॥ अष्टमहायज्ञी
तनिनवावयः ॥ अनगविप्रमालतिर्वीनुव ॥ ॥ विधवापितताज्ञीनेद्विः ॥

महानि

श्री

स्वयनिलजनजातिमय २ श्रीरामसुखरुलदायनिदवीः ऊमऊमभानुपुङ्गवसुव
 ता ॥ - १००० - ॥ ~~महानिपुणपुत्राः इयीनीकुना २ सकलदेवगनवंदी~~
 तथादा ॥ ५ ॥ मेषीश्रीदेवदुःखीमशरुमाला २ त्वं मृषिवेदि तपमन्त्रशुभवा ॥
 कुरुसन्नीवाहूनचीनविषमा ॥ ६ ॥ गंगारिनाकनृशविहाया ॥ विषयविषमरु
 टपानगमनस्य २ विश्वविषापितः श्रीययुनृवर्य ॥ ॥ सतगुरुयनसादिविभु
 आनास्था २ गगौतेरपनवकृति ॥ - १००० - ॥ ~~महानिपुणपुत्राः इयीनीकुना २ सकलदेवगनवंदी~~ ॥ श्रीमशरुनाथन

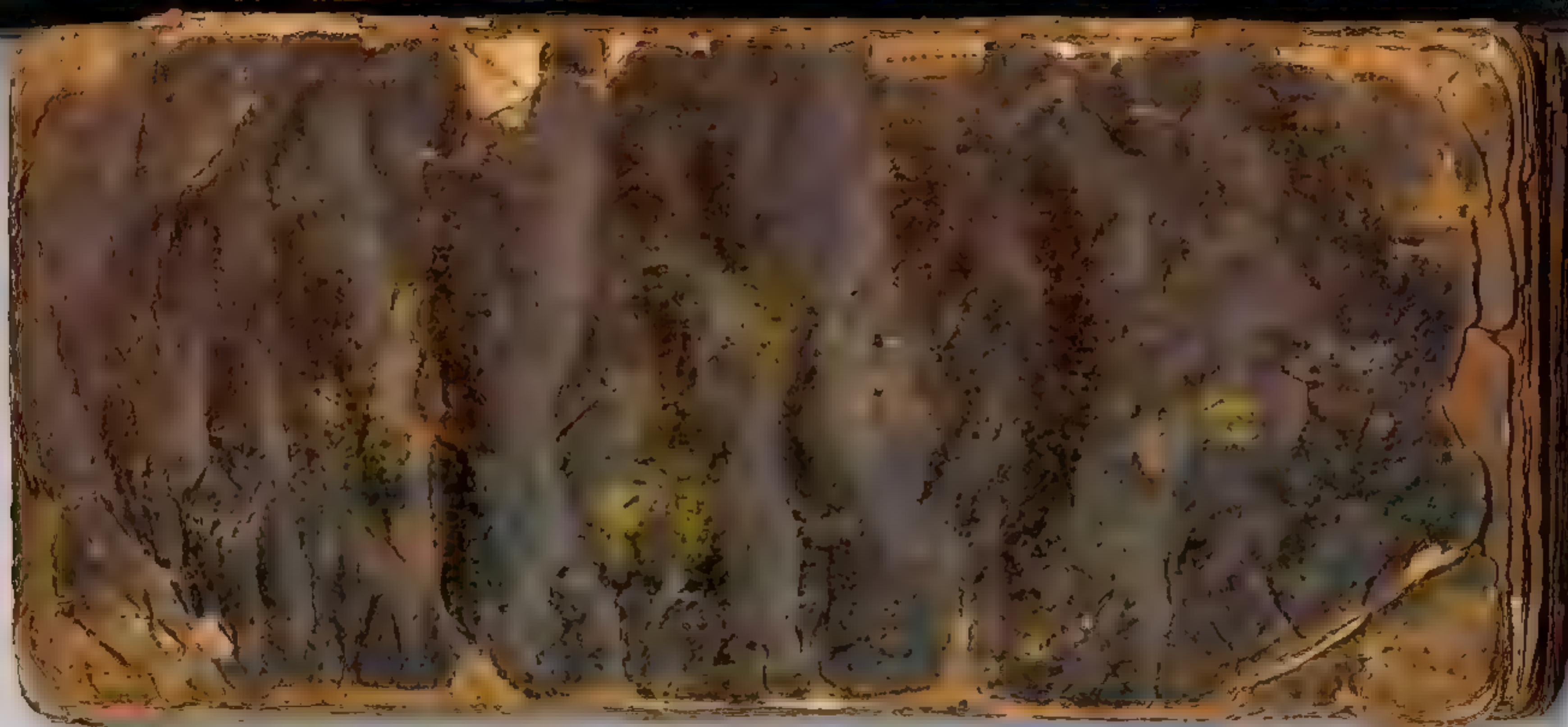
महानिपुणपुत्राः

नमहाचिनविजया २ चट्टहासखमधारीः नागवाससुत्र ॥ ५ ॥ नमामे २ श्रीमशरु
 कुरुना २ जगादिभवनजगतयुनृदेवतयापिता ॥ ॥ प्रककधनहृत्पनमयुनृला
 या २ श्रीधर्मधायुल्लनक्षपालमधुललंकना ॥ ॥ जगतनाथः जगतनिबंजलोया
 २ सर्वभासुवितायदः पृथुतनिलंजना ॥ - १००० - ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 कमखनकवर्धनीभय २ सकुतकोसेदिगंववा ॥ ५ ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥ नमः ॥
 ॥ वामकलाटकमधुता २ वादसतानधजनगुर्शकाजाः सर्वदेवपदीमधुता ॥

महानिपुणपुत्राः
 इयीनीकुना २ सकलदेवगनवंदी

卷之五

卷之五



卷之六

[illegible]

佛說阿彌陀經

[illegible]

श्रीगणेशाय नमः

वज्रकाशीनीलाहिकवर्णः १ अमृतं ववाधिप्रदायानिदिवि ॥ श्रीरत्नवन्द्य
पिकर्दाहेतवचोतेधानी २ सहजासहचरिणी ३ ॥ कर्तागमवसनीहवः
मशुला २ वामघर्पवकमुखजनिधानी ॥ नवधर्मोदयोचमयीताद्वयं २
एनसासिवाधुलीसुहृद्वनी ॥ - ०१०॥ - ॥ का. कलकतद्वय ॥ श्रीवतीनेहोहिकवा
मज्ञानः स्वभक्तिवसमालसयासा २ नागधुषमाहवदिलयासाः श्रीरत्नलायाश्रुच
लविना ॥ ५ ॥ नसासिवाचमुसदाशयनाः जातभूयस्यकृपयादिना २ विश्वनाथवी

श्रीगणेशाय नमः

स्वयाधिकः एवरावेकमहाकाधलाया ॥ श्रीमतिरिचनंगउर्ध्वपचन्द्राः प्रह्लाक
नायातिस्वमवदनाशेषिष्ठितश्रुद्वयककलनयमाः वेनीसयासायावहसुनक्ष ॥
॥ माधवमायाः पूनदनवृक्षाः श्रीपिष्ठाश्चादिपाणवहनना २ समनक्षमायाः
वाविमाहाः ज्ञानलायासर्माहिकदहा ॥ नलाहनक्षः पुकारितमोलिः कस
ननगाएनवृत्तं ननका २ नननननागः वीदितचवक्षः लायसुनका २ ननलाचि
नात - ०१०॥ - ॥ नागकलकतद्वय ॥ श्रीवतीनेहोहिकजानूः नीलसमदहा २ ककलाया

[illegible]

चविस्त्रसूडाश्रादसर्ना २ पहाश्रालीगशे २ दयमहाधुरव ॥ ॥ विनागचधु
 तिरुवहयंकवा २ कस्यनीहकस्वञ्जकजनीयास ॥ ॥ मालचधुनदयोनिरेवेल
 विप्रहन्ता २ विविमिङ्गलधुगगनवीनासयीञ्चला ॥ ५००५ ॥ नालेनवि
 जयं २ वाङ्गलिसयलसाहाकरी २ अखयउखयसहावधन ॥ ५१ ॥ ननंमनञ्चनहा
 २ कालनाचयीमालनिबगान्व ॥ ५२ ॥ मयवयमिबदहपूरव २ किमजननीवजय
 गानीध ॥ ५३ ॥ २ दोजं २ अङ्गवशसुसाहा २ कनिककपालस्वदीगधानाध ॥ ५४ ॥

वक्रांगीनी

२ श्री ५ असा नति २ श्री वानुद नल सील माला ॥ ॥ कर्प २ वा घट्ट जगत सभा नर
 पन्नमामि अदयः सखा वृत्ति ॥ २८ ॥ ० ॥ ० ॥ ॥ नमो वरुण ॥ वक्रांगिनि हनुगलाया
 २ श्री कवन नाथ दहि मपान ॥ ५ ॥ पिवयी नमहा सुखक्ष दीया २ वरुद विरुल
 यी अत्रु रुच हान ॥ ॥ उद्य ना जी पी दल कमल संकाह २ दहि विना मयी यवन
 सरुद यी ॥ ॥ रुद्र यी लय क महा सुखक्ष दीया २ य क हिल भवी जवा नून ॥
 ॥ सतगुनु प्रभाद च गुर्था ही खकं २ प्रा २ ध २ श्री संभाल समूडा ॥ २८ ॥ ० ॥ ० ॥ ॥

श्री वरुण कर्प २ वा घट्ट जगत सभा नर

नमो वरुण ॥ नक वरुण दहाः हिरु क कासा २ नग म मरुट क भा धि निचे नीला ॥ ५ ॥
 नमो सिद विः वे आ ध रो पी द भ न य आ पता २ अ धि सि धि प्र दार नि क ग त न नी ॥ ॥ द
 हि न हा दि नाः वा म पा य ध नी २ दि चो व पू य मालाः क न धा री ता ॥ ॥ हानु म धु ल
 मा २ उ काल नो पति २ ना ना व ल लं क र म य व य सि ता ॥ ॥ २८ ॥ ० ॥ ० ॥ ॥ नाग मु क्त लि ॥
 उ ल न न ॥ श्री नी त द नू ला सा २ रु २ नि ल री त पि म ल क भा ॥ ५ ॥ ॥ जग द नू कं पाः
 ह क पा गु ध दि वि २ रु माला वि प्र दि ना स नि दि वि ॥ ॥ न क न य न पी थी नू ड माला

STAY

金

五

[illegible]

खलनीयवयायल२ घाघलहस्यद्यचर्त॥ ॥ कृतानकटोविध्वजेवे२ शुक्रमृ
क्षुञ्जचडचक्रं॥ ॥ सव्यकनूनामघश्ठ२ लेनवकालीअलिधयदं॥
ऊयथीदीहउसम्बलगीरवनवापिता२ अशिसिद्धिमहासूडासिद्धि॥ ॥ १०५३-॥
~~नालवकस~~॥ अष्टनामीअष्टप्रानकाल२ अष्टआगीतीवच॥ ॥ ॥ सिलस
शिभ्रककुलस्फुरा२ दविषसादनभाक्षमार्ग॥ ॥ ननसुवरत्नअधिपप्रशः
काल२ गुरुवाकनअबाहुं॥ ॥ हूलवंसमायुक्तद्वलदं२ सुदिहोचैरुनास

[illegible][illegible]

पुत्रकायनि

[illegible]

अथ यतिस्तुम्भ

[illegible]

राष्ट्रिय

[illegible]

विश्वय

संभोगाचसविल हविलभवः तजोयसयलतभचदा मूर्धुचा ॥ - ०००॥०- ॥ नमस्त
लिरागोदेसयशवेनूपवनसका हजालादिचंहुमलि कालिकमल २ दहिनजिनवि
सुभासिमलीयधुनगजिन विनिज्जवासमय ॥ ॥ नमस्त
खंकारचक्र हवजसन्वलोवधुनगश्यायंयइमसिका गसंलवनिधुनः सहज
नद्यमयहाननूर्य ॥ ॥ वजयर्थकंकातंक्रंक्रमनूक्षतनूर नामतनिर्गते मृत्पाल
नैरजगतउखनामनः वाधि हलदायकं जागः धम्मभा नूलाव हृदय ॥ ॥

पुष्पगुप्त

पुष्पाकदम्बधनीयाः मूर्धुयवनसूचयाः मानिमहचः आलीउभादिधनीया २ वउच
कपोतसविवः यवमध्वनमूर्यहम भा नूचा ना हववनी ॥ स्वप्रमायास हसंला
वयदीहावनाः वधुधम्मसघ सवनगमिगं २ गुनूचवनसिलगतधरियाः गभशक्ति
धुनकवजः क्रमजन्म भा नूच सवननी - ०००॥०- ॥ नमस्त
विदिगहवनः धंसिनमाल चवराग २ नगनसिधु नैकावागम ॥ ॥ नमस्त
श्रुवाजिया ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ नैमातिपधुनकिनी सवनशङ्करगता ॥ ॥ पूर्वउ
पेकउपुति हानठाकिनी

गग/ह/ममय/गग/ह/नैपूनी

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ विष्णुसालाविष्णुसाला ॥ अकीनीद्विपिनीच
 उतिकवाङ्मनोऽथानवमालासयाकव ॥ ॥ सिंधिनिवापिनिः ॥ अमुक उवाकिनी
 एवमोगयजस्रश्रुसहस्राश्च उवाकिनीधालवताल अकीनिः चंजाला अकि
 निचगुनदवि ॥ ॥ अकिनजनविदवि अकीनीगुणपायसबन्धः पचनडाहव
 नहोषिताश्च जहन्कवजघश्च स्वत्वाहः पायनमन्त्रीज्ञानदवी ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नमो भगवते वासुदेवाय ॥ अलपचनश्रीमन्कुमालाश्च नवन्त्रिकिनक्षत्रहंसकासनैहदहा ॥

॥ दधुश्रीमरुघाखनहवनव्यापिताश्चष्ट्रजनवलं दहितकनकाचीप ॥

卷之五

रम्यमभिनः ह्येसविनभनः नाच० सहजाभूतयय ॥ ॥ कंकलिधायाव
 हितमघाः कालाकलाककाटकनाम शकलीकलेनवाः वरुनसघाः सलसिल
 नाराचूतकहदाः धनितमघामहायमनाम ॥ ॥ धावभमानयकतिहदा
 अतननामयवननमघाशकालिकलिलतावा अरुनहदाः कलिकनामव
 रुतमघा ॥ ॥ द्वादशरजाद्वादशरुवनाः चतुर्वक्त्रवदनाद्वादशनयना
 रुनयिकर्षपावावाखहृत्तना कालिबीडीनुएचापयिवदना ॥ -८५०५०- ॥

नामलेवावे ॥ धूमिगभविचय कलालि शिखमपिगल कधवयन ॥ ५ ॥ रुं
 ऊयियावहूहूर कलंककलाली २ नानाविहानयोडवैमहावलियूजा ॥ ॥ स
 मयावहूहुजागमवदवाश्वाहूविवाहूरीचउमूहवयन ॥ ॥ सितवयनकलंकक
 यावलिस्रहा २ एलिकंनकवमहूववयन ॥ ॥ योडमहामहावलियुधिवनग्रहाना
 रमयमाससूत्रिबज्राहा ॥ -८५०५०- ॥ ॥ दामनहाल ॥ पातकानगनज्जनाधियाय
 शसिद्याजागवहूदरुत्तवदव ॥ ५ ॥ नमामिभीलाकस्वर्गयैरुवननाथशकर

धूमिगभ
 धावभमानय

[illegible][illegible]

॥ नलभिमालावलीसम्बलः देवचक्षुषीति कनुध हृदया रजचरममानुतुरुपा
यस्वनाह्मातातेपनसादेवजीमेता ॥ -- ६॥०॥३ -- ॥ रागम्बुगी ॥ द्वितीनीसभावनवि
वासियकायिस उथहनादामधुललाया ॥ ५ ॥ उऊकालहमलऊगतनिर्वाणीयाल ॥
॥ अमियशनिर्नऊतदस सहऊधनीयाऊनेनहूलायिस ॥ ॥ उचउऊगिनीय
लमलमनाश्वऊवानहिआलिङ्गनकाल ॥ ॥ उथहवीडाकनुधकवावी २ ऊयंऊयं
आलिङ्गनकाल ॥ ६॥०॥३ ॥

रागकर्णा ॥ श्रीमंनुताथवलमहाचिन्तविजया २ चन्द्रहासरवङ्गधारिनागवासस्थरु ॥
 ध्रु ॥ नमामि २ श्रीमंजुहुमाला २ जगदिश्वरजगतगुरुभूवमयापिता ॥ ॥ पुरा
 कधरशुभयरमगुरुलाया २ श्रीधर्मधादुस्थानहोपालमहानलं कृता ॥ ॥ ज
 गतताथजगतनिलंजनाया २ सर्वशास्त्रविमालदयशिरतनिलंजना ॥ ध्रु ॥
 ॥ रागगुंजति ॥ ५ नमस्तुते नमस्तुते नमस्तुते २ नमस्तुते नमस्तुते विजयकला ॥ ध्रु ॥
 जगत्तुकेपादपागुनदावे २ द्रु

१ नमस्तान १
 २ वागमाता २
 ३ विश्वसनाद् ३
 ४ मरश्मनु ४
 ५ नेत्यानादि ५
 ६ मकरद ६
 ७ रवरागिनि ७
 ८ आभ्राह्म ८
 ९ अग्निन ९
 १० मन्त्रेन १०
 ११ शानिनायन ११
 १२ नकवर्ह १२
 १३ नमोद १३
 १४ शिचक्र १४
 १५ शिखरनगालिग १५
 १६ कालिगवक्रान १६
 १७ कालो १७
 १८ सर्वप्रश्न १८
 १९ दागरुनन १९
 २० शिष्टा २०
 २१ शोवहोवे २१
 २२ शोदिगा २२
 २३ शोदेकसकव २३
 २४ शोच नासकु २४

१ शि १
 २ शि २
 ३ सवा ३
 ४ कर्क ४
 ५ पुक्षालिगह ५
 ६ शिष्टवक्रान ६
 ७ वासरवत्यन ७
 ८ कर्कसिद्ध ८
 ९ कर्कालस ९
 १० चक्रिद्ध १०
 ११ शिष्टलगा ११
 १२ संधानेप १२
 १३ दिक्क १३
 १४ सकलग १४
 १५ पुर्वेवाजद १५
 १६ एनमनग १६
 १७ नमामि १७
 १८ अवातिनि १८
 १९ अवातिनि १९
 २० इयः इय २०
 २१ वक्रागि २१

शुभ

१ नकवर्हदि १
 २ कमान २
 ३ सकरन ३
 ४ सोयाजाल ४
 ५ कर्कालसगान ५
 ६ अष्टनादि ६
 ७ निमनगयन ७
 ८ नमामिः निनभर्मिधा ८
 ९ कर्कवक्रानयनि ९
 १० अवातिनोवन १०
 ११ शिष्टागिनि ११
 १२ विरवय १२
 १३ अष्टाक्षजया १३
 १४ अनाप १४
 १५ चक्रगमभन १५
 १६ धमामिनि १६
 १७ धाककानगन १७
 १८ अवातिन १८
 १९ सकलः अष्ट १९
 २० शोवने २०
 २१ शोवदिगि २१
 २२ शोमादिगा २२
 २३ शोविनि २३

शुभागुर्वदेवा शान्तेयान